चाँद से थोड़ी-सी गप्पें

कक्षा –६

पाठ–चार

(गीता शर्मा)

जीवन परिचय

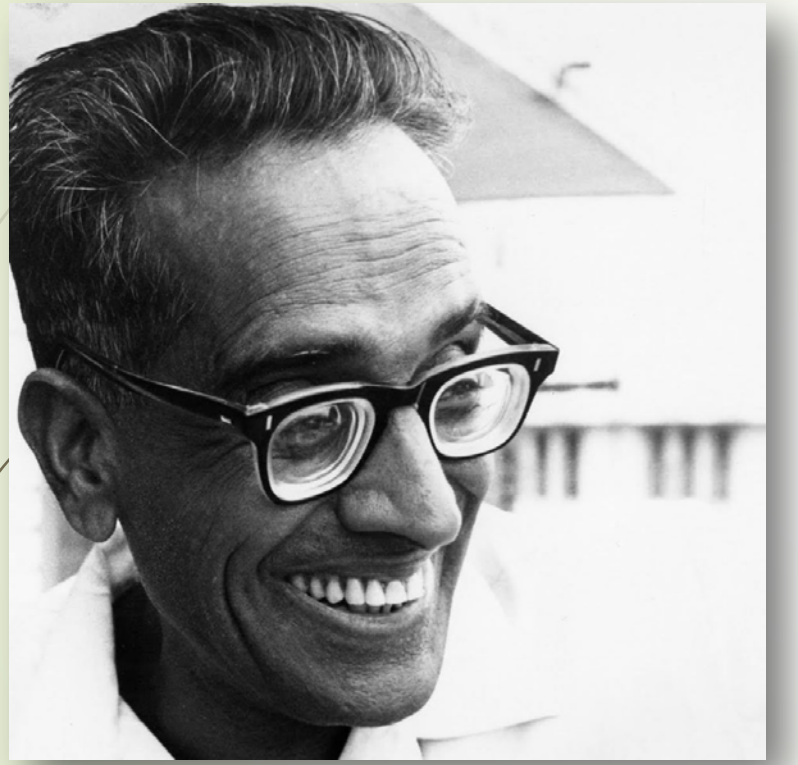

शमशेर बहादुर सिंह का जीवन परिचय: शमशेर बहादुर सिंह का जन्म मुज़फ़्फरनगर में तथा शिक्षा देहरादून और प्रयाग में हुई। ये हिन्दी तथा उर्दू भाषा के विद्वान कवि थे तथा इनकी शैली अंग्रेज़ी कवि एज़रा पाउंड से प्रभावित है। इन्हें अपने लेखों के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, कबीर पुरस्कार तथा मैथिलीशण गुप्त पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

‘चाँद से थोड़ी सी गप्पें’ कविता का सार

प्रस्तुत कविता हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक और कवि श्री शमशेर बहादुर सिंह द्वारा लिखी गई है। इस कविता में एक दस-ग्यारह साल की लड़की को चाँद से गप्पें लड़ाते हुए अर्थात् बातें करते हुए दिखाया गया है। वह चाँद से कह रही है कि यूं तो आप गोल हैं, पर थोड़े तिरछे-से नज़र आते हैं। आपने इस तारों-जड़ित आकाश का वस्त्र पहना हुआ है तथा उसके बीच में से आपका केवल ये गोरा-चिट्टा और गोल-मटोल चेहरा ही दिखाई देता है।

वो चाँद से कहती है कि हम जानते हैं कि आपको कोई बीमारी है, तभी तो आप घटते हैं तो घटते ही चले जाते हैं और बढ़ते हैं तो बढ़ते ही रहते हैं। आप ऐसा तब तक करते हैं, जब तक आप पूरे गोल नहीं हो जाते। वो आगे कहती है, पता नहीं क्यों आपकी ये बीमारी ठीक ही नहीं होती। इस तरह कवि ने चाँद के प्रति एक छोटी-सी बच्ची की भावनाओं का बड़ा ही रोचक और मनभावन चित्रण किया है।

चाँद से थोड़ी सी गप्पें

कविता

- गोल हैं खूब मगर
आप तिरछे नज़र आते हैं ज़रा।
आप पहने हुए हैं कुल आकाश
तारों-जड़ा;
सिर्फ मुँह खोले हुए हैं अपना
गोरा-चिट्टा
गोल-मटोल,
अपनी पोशाक को फैलाए हुए चारों
सिम्त।

अर्थ

- चाँद से थोड़ी सी गप्पें कविता के प्रथम पद में बालिका चाँद से कह रही है कि यूं तो आप गोल हैं, पर फिर भी थोड़े-से तिरछे दिखाई देते हैं। ये आकाश मुझे आपके वस्त्र की तरह नज़र आता है, जिसमें अनगिनत तारे जड़े हुए हैं तथा इस पूरे विशाल पोशाक-रूपी आसमान में आप अकेले ही गोल-मटोल और गोरे-चिट्टे-से अपनी आभा फैलाए हुए दिखाई पड़ते हैं।

चाँद से थोड़ी सी गप्पें

कविता

- आप कुछ तिरछे नज़र आते हैं जाने कैसे
– खूब हैं गोकि!
वाह जी, वाह!
हमको बुद्धू ही निरा समझा है!
हम समझते ही नहीं जैसे कि
आपको बीमारी है:

अर्थ

- चाँद से थोड़ी सी गप्पें कविता के इस पद में लड़की चाँद से कहती है कि ये जो आप थोड़े-से तिरछे से नज़र आते हो, अच्छे तो लगते हो, पर हमको आप बेवकूफ़ ना समझना, हम सब जानते हैं कि आपका ये तिरछापन आपकी किसी बीमारी की वजह से है।

चाँद से थोड़ी सी गप्पें

कविता

- आप घटते हैं तो घटते ही चले जाते हैं,
और बढ़ते हैं तो बस यानी कि
बढ़ते ही चले जाते हैं
दम नहीं लेते हैं जब तक बिल्कुल ही गोल ना हो जाएं,
बिल्कुल गोल ।

यह मरज़ आपका अच्छा ही नहीं होने में.... आता है।

अर्थ

- चाँद से थोड़ी सी गप्पें कविता के इस अंतिम पद में बालिका चाँद से कहती है कि आप घटते हैं तो घटते ही चले जाते हैं और बढ़ते हैं तो बढ़ते ही चले जाते हैं। पता नहीं क्यों, आपकी ये बीमारी ठीक ही नहीं हो रही है। अतः छोटी बालिका चाँद के घटते और बढ़ते रूप को एक बीमारी समझ रही है।

प्रश्न / उत्तर

प्रश्न.१. कविता में 'आप पहने हुए हो कुल आकाश ' कहकर लड़की क्या कहना चाहती है?

उ.१. कविता में लड़की कहना चाहती है कि चाँद, तारों से जड़ित संपूर्ण आकाश-रूपी वस्त्र को पहने हुए है।

प्रश्न.२. 'हमको बुद्धू ही निरा समझा है' , कहकर लड़की क्या कहना चाहती है?

उ.२. लड़की यह कहना चाहती है कि चाँद उसे बुद्धू ना समझे, वह चतुर है और जानती है कि चाँद को कोई बीमारी है।

प्रश्न.३. आशय बताओ:

"यह मरज़ आपका अच्छा ही नहीं होने में आता है।"

उ.३. इस पंक्ति का आशय यह है कि लड़की को लगता है कि चाँद को कोई बीमारी है, जो कि ठीक ही नहीं हो रही है क्योंकि यदि वो घटते हैं तो घटते ही जाते हैं और बढ़ते हैं तो बढ़ते ही चले जाते हैं, जब तक कि पूरे गोल ना हो जाएं।

प्रश्न / उत्तर

प्रश्न.४. कवि ने चाँद से गप्पें किस दिन लगाई होंगी? इस कविता में आई बातों की मदद से अनुमान लगाओ और उसका कारण भी बताओ।

उ.४. कवि ने चाँद से गप्पें निम्नलिखित दिनों में लगाई होंगी –

दिन	कारण
पूर्णिमा	
अष्टमी	
अष्टमी से पूर्णिमा के बीच	कवि ने चाँद से गप्पें अष्टमी से पूर्णिमा के बीच लगाई होगी। क्योंकि कवि अपनी कविता में कहते हैं। “गोल है खूब मगर आप तिरछे नज़र आते हैं ज़रा।” अर्थात चाँद गोल है पर पूरी तरह से गोल नहीं है। उसकी गोलाई थोड़ी तिरछी है। इससे साफ़ पता चलता है कि पूर्णिमा होने में अभी एक या दो दिन का समय और है।
प्रथमा से अष्टमी के बीच	

प्रश्न / उत्तर

प्रश्न.५. नई कविता में तुक या छंद की बजाय बिंब का प्रयोग अधिक होता है, बिंब वह तसवीर होती है जो शब्दों को पढ़ते समय हमारे मन में उभरती है। कई बार कुछ कवि शब्दों की ध्वनि की मदद से ऐसी तसवीर बनाते हैं और कुछ कवि अक्षरों या शब्दों को इस तरह छापने पर बल देते हैं कि उनसे कई चित्र हमारे मन में बनें। इस कविता के अंतिम हिस्से में चाँद को एकदम गोल बताने के लिए कवि ने बि ल कु ल शब्द के अक्षरों को अलग-अलग करके लिखा है। तुम इस कविता के और किन शब्दों को चित्र की आकृति देना चाहोगे? ऐसे शब्दों को अपने ढंग से लिखकर दिखाओ।

उ. ५.

(i) **गो-ल**

(ii) **बि-ल-कु-ल**

(iii) **ति-र-छे**

(iv) **ब-ढ-ते**

प्रश्न / उत्तर : भाषा की बात

प्रश्न.१. चाँद संज्ञा है। चाँदनी रात में चाँदनी विशेषण है।

नीचे दिए गए विशेषणों को ध्यान से देखो और बताओ कि कौन-सा प्रत्यय जुड़ने पर विशेषण बन रहे हैं। इन विशेषणों के लिए एक-एक उपयुक्त संज्ञा भी लिखो-

गुलाबी पगड़ी / मखमली घास / कीमती गहने / ठंडी रात / जंगली फूल / कश्मीरी भाषा

उ.१.	विशेषण		प्रत्यय		संज्ञा
(i)	चाँदनी	—	ई	—	चाँद
(ii)	गुलाबी	—	ई	—	पगड़ी
(iii)	मखमली	—	ई	—	घास
(iv)	कीमती	—	ई	—	गहने
(vi)	ठंडी	—	ई	—	रात
(vii)	जंगली	—	ई	—	फूल
(viii)	कश्मीरी	—	ई	—	भाषा

प्रश्न / उत्तर : भाषा की बात

प्रश्न. २ . •गोल-मटोल •गोरा-चिट्टा

कविता में आए शब्दों के इन जोड़ों में अंतर यह है कि चिट्टा का अर्थ सफ़ेद है और गोरा से मिलता-जुलता है जबकि मटोल अपने-आप में कोई शब्द नहीं है। यह शब्द 'मोटा' से बना है। ऐसे चार-चार शब्द युग्म सोचकर लिखो और उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

उ. २.

(i) **दुबला–पतला – यह दुबला–पतला आदमी काफ़ी कमज़ोर है।**

(ii) **काला–कलुठा – राकेश का दोस्त राहुल काला–कलुठा है।**

(iii) **दाना–पानी – बस इतने दिन का ही दाना–पानी लिखा था यहाँ।**

(iv) **रोज़मर्रा – यह भाग-दौड़ भरी जिन्दगी रोज़मर्रा की बात हो गई है।**

प्रश्न / उत्तर : भाषा की बात

प्रश्न. ३ . 'बिलकुल गोल' – कविता में इसके दो अर्थ हैं-

(क) गोल आकार का

(ख) गायब होना!

ऐसे तीन शब्द सोचकर उनसे ऐसे वाक्य बनाओ कि शब्दों के दो-दो अर्थ निकलते हों।

उ. ३.

(i) **कल – मैं कल स्कूल नही आऊँगा।**

– यहाँ के सभी कल-कारखाने बंद पड़े हैं।

(ii) **पानी – इस तालाब का पानी बिलकुल साफ़ है।**

– राहुल भरी कक्षा में शर्म के मारे पानी–पानी हो गया।

(iii) **कनक – कनक के आभूषण बहुत चमकीले होते हैं।**

– कनक को खाने से वह पागल हो गया है।

प्रश्न / उत्तर : भाषा की बात

प्रश्न. ४ . जोकि, चूँकि, हालाँकि कविता की जिन पंक्तियों में ये शब्द आए हैं, उन्हें ध्यान से पढ़ो। ये शब्द दो वाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं। इन शब्दों का प्रयोग करते हुए दो-दो वाक्य बनाओ।

उ. ४.

(i) जोकि – तुम्हें गौतम के घर जाना होगा जोकि दूर है।

– तुम बाजार से सामान लेकर आओ जोकि दूर है।

(ii) चूँकि – चूँकि मैं आज बीमार हूँ इसलिए आज स्कुल नही जा सकता।

– चूँकि सवाल कठिन था इसलिए मैं नही बना पाया।

(iii) हालाँकि – हालाँकि आज बारिश हो रही है फिर भी तुम्हें मेरे घर आना होगा।

– हालाँकि मुझे पता है फिर भी मैं तुमसे यह सुनना चाहता हूँ।

प्रश्न / उत्तर : भाषा की बात

प्रश्न. ५ . गप्प, गप-शप, गप्पबाज़ी क्या इन शब्दों के अर्थ में अंतर है? तुम्हें क्या लगता है? लिखो।

उ. ५.

गप्प– बिना काम की बात।

गप–शप – इधर-उधर की बातचीत।

गप्पबाज़ी – कुछ झुठी, कुछ सच्ची बात।

धन्यवाद